Cambridge IGCSE

Cambridge Assessment International Education
Cambridge International General Certificate of Secondary Education

HINDI AS A SECOND LANGUAGE **0549/02**

Paper 2 Listening **October/November 2019**

TRANSCRIPT

Approx. 35–45 minutes

This document consists of **9** printed pages and **1** blank page.

© UCLES 2019

Cambridge Assessment International Education

[Turn over

https://xtremepape.rs/

Cambridge Assessment International Education
Cambridge IGCSE
March 2019 Examination in Hindi as a Second Language
Paper 2 Listening Comprehension

Turn over now

[Pause 5 seconds]

FEMALE: अभ्यास 1: प्रश्न 1-6

प्रश्न 1 से 6 के लिए आप क्रमानुसार कुछ संक्षिप्त संवाद सुनेंगे। उनके आधार पर प्रत्येक प्रश्न का उत्तर नीचे दी गई रेखा पर लिखिए। आपके उत्तर जहाँ तक हो सके संक्षिप्त होने चाहिए।

आपको प्रत्येक संवाद दो बार सुनाया जाएगा।

[Pause 5 seconds]
[Signal]
[Pause 3 seconds]

FEMALE: * **संवाद 1**

MALE: * देवियो और सज्जनो! मैं हूँ इस उड़ान का कप्तान, रितेश साहनी। नमस्कार। हम लोग इस समय लगभग 35 हज़ार फुट की ऊँचाई पर नीलगिरि पर्वतमाला के ऊपर से उड़ान भर रहे हैं। बाहर का तापमान शून्य से 10 डिग्री नीचे है। तिरुअनन्तपुरम अब केवल 30 मिनट की दूरी पर है जहाँ का तापमान इस समय 28 डिग्री है। कुछ ही देर में हम तिरुअनन्तपुरम के लिए उतरना शुरू करेंगे। उड़ान का आनंद लीजिए और सेवा का मौक़ा देते रहिए। धन्यवाद। **

[Pause 10 seconds]
[Repeat from * to **]
[Pause 5 seconds]

FEMALE: संवाद 2

MALE: * पुरुषः नमस्कार, मैं अपने खाते से कुछ पैसे निकालना चाहता हूँ।

महिलाः ज़रूर निकालिए। आपके पास आपकी चैक बुक है?

पुरुषः जी नहीं, बस डेबिट कार्ड है।

महिलाः डेबिट कार्ड है तो फिर आप मशीन से क्यों नहीं निकाल लेते?

पुरुषः जी, यही तो मुसीबत है! मशीन में पैसा नहीं है। बंद पड़ी है।

महिलाः माफ़ी चाहती हूँ। लेकिन यहाँ से तो आपको चैक के बिना पैसे नहीं मिल सकते। आप किसी दूसरी मशीन पर जा कर देख लीजिए!

पुरुषः जी, कोई और मशीन है, आसपास?

महिलाः यहाँ से कोई दो सौ गज की दूरी पर सेक्टर 10 का बाज़ार है। वहाँ मिल जाएगी।**

[Pause 10 seconds]
[Repeat from * to **]
[Pause 5 seconds]

© UCLES 2019

https://xtremepape.rs/

MALE: संवाद 3

FEMALE: * कृपया ध्यान दें। व्यायामशाला की गतिविधियाँ सभी के लिए खुली हैं। आप आकलन मशीन पर जाकर अपने शरीर के चर्बी और मांसपेशियों के अनुपात को माप सकते हैं और अपनी उँचाई के आधार पर आपका आदर्श भार क्या होना चाहिए इसका पता लगा सकते हैं। आप दौड़ने, चढ़ने, नाव खेने और साइकिल चलाने वाली मशीनों का और मांसपेशियाँ बनाने वाली मशीनों का प्रयोग कर सकते हैं। आप ताल में जाकर तैर सकते हैं। भाप स्नान कर सकते हैं और योग भी कर सकते हैं। **

[Pause 10 seconds]
[Repeat from * to **]
[Pause 5 seconds]

MALE: संवाद 4

FEMALE: * महिलाः हैलो! क्या बात है फ़ोन ही नहीं करती हो! क्या मियाँ से इजाज़त लेनी पड़ती है?

पुरुषः मियाँ तो ख़ुद हाज़िर है भाभी, क्यों बेचारे को बदनाम करती रहती हैं आप?

महिलाः अरे भाई साहब, आप! आप कब आए? और यह फ़ोन तो नीलू का है!

पुरुषः हाँ हाँ, उसी का है। वह गुसलख़ाने में थी इसलिए उठा लिया। वैसे किसने कहा कि मैं कहीं जाने वाला था?

महिलाः शायद नीलू ने ही ज़िक्र किया था। माफ़ कीजिए...

पुरुषः मैं नहीं, नरेश जाने वाला था स्वीडन, एक सेमीनार के लिए।

महिलाः माफ़ कीजिए। हो सकता मुझसे समझने में भूल हो गई हो। **

[Pause 10 seconds]
[Repeat from * to **]
[Pause 5 seconds]

MALE: संवाद 5

FEMALE: * महिलाः कहिए जनाब, क्या मैं आपकी कुछ मदद कर सकती हूँ?

पुरुषः जी ज़रूर। मैं अपनी दोस्त को देने के लिए एक उपहार ढूँढ रहा हूँ।

महिलाः किस अवसर के लिए? क्या कोई रोमांटिक संदेश देना चाहते हैं?

पुरुषः नहीं। बस शुक्रिया करना चाहता हूँ किसी काम के लिए।

महिलाः समझ गई। यह घड़ी कैसी रहेगी? इसमें कलैंडर भी है और डायल भी कलात्मक है।

पुरुषः हाँ, है तो सुंदर। लेकिन बहुत पारंपरिक चीज़ है।

महिलाः यह पेंटिंग कैसी रहेगी।

पुरुषः पेंटिंग का विचार अच्छा है। चलिए, बाँध दीजिए।**

[Pause 10 seconds]
[Repeat from * to **]
[Pause 5 seconds]

https://xtremepape.rs/

MALE: **संवाद 6**

FEMALE: *भारतीय मूल के सिख तनमनजीत सिंह ढेसी और वीरेंद्र शर्मा ने इंग्लैंड में इतिहास रचा है। तनमनजीत सिंह ब्रितानी संसद की आम सभा हाऊस ऑफ कॉमन्स के पहले सिख यानी पगड़ी धारी सांसद चुने गए हैं। इससे पहले वे इंग्लैंड के ग्रेवशैम शहर में यूरोप के सबसे युवा सिख महापौर रह चुके हैं। वीरेंद्र शर्मा पश्चिमी लंदन के ईलिंग चुनाव क्षेत्र से लगातार चौथी बार सांसद चुने गए हैं। वे इसलिए भी चर्चा में हैं, क्योंकि वीरेंद्र शर्मा ने इंग्लैंड में अपनी यात्रा एक ट्रक ड्राइवर के रूप में शुरू की थी। उसी दौरान उनका रुझान यहाँ की राजनीति की ओर हुआ। **

[Pause 10 seconds]
[Repeat from * to **]
[Pause 5 seconds]

FEMALE: **यह अभ्यास 1 का अंतिम संवाद था। थोड़ी देर में आप अभ्यास 2 सुनेंगे। अब आप अभ्यास 2 के प्रश्नों पर ध्यान दीजिए।**

[Pause 30 seconds]

MALE: **अभ्यास 2: प्रश्न 7**

बनारस हिंदू विश्वविद्यालय की राष्ट्रीय भाषण प्रतियोगिता जीतने वाले छात्र प्रखर चाँद से युवा मंच की प्रस्तुतकर्ता ऋचा दत्त की बातचीत को ध्यान से सुनिए और नीचे छोड़े गए खाली स्थानों को भरिए।

यह बातचीत आपको दो बार सुनाई जाएगी।

[Pause 5 seconds]
[Signal]
[Pause 3 seconds]

FEMALE: ऋचाः प्रखर चाँद, आज के युवा मंच में आपका स्वागत है। सबसे पहले तो बनारस हिंदू विश्वविद्यालय की राष्ट्रीय भाषण प्रतियोगिता जीतने पर बधाई!

MALE: प्रखरः धन्यवाद, ऋचा जी।

ऋचाः प्रखर, प्रतियोगिता का विषय था सुशासन में तकनीक। यह बताइए कि इसकी मिसाल देने के लिए आपने शेरशाह सूरी को क्यों चुना?

प्रखरः ऋचा जी, मुझे मालूम था कि लगभग सभी वक्ता कंप्यूटरों, स्मार्टफ़ोनों और सोशल मीडिया की बातें ही करेंगे। मेरे विचार में तकनीक का मतलब आधुनिक तकनीक ही नहीं है। कोई भी तरक़ीब जो शासन के कामकाज को सुगम बनाए वह सुशासन की तकनीक का उदाहरण बन सकती है। बाबर के मामूली सैनिक से मुग़ल बादशाह बने शेरशाह सूरी ने शासन को सुगम बनाने के जो तरीक़े अपनाए थे, उनमें से कुछ आज भी प्रासंगिक हैं। जैसे कि देश के एक कोने को दूसरे कोने से जोड़ने वाली सड़कें। शेरशाह सूरी ने सिंध नदी को बंगाल के सोनारगाँव से जोड़ने वाली जो सड़क बनवाई थी, वह आज ग्रांड ट्रंक रोड़ के नाम से जानी जाती है।

ऋचाः हाँ, इसके कुछ हिस्सों को महात्मा गाँधी मार्ग का नाम भी दे दिया गया है। लेकिन शेरशाह के ज़माने में इस सड़क का नाम क्या होता था?

प्रखरः लगभग 2000 किलोमीटर लंबी इस सड़क का नाम सड़क-ए-आज़म था। बाद में इसे शेरशाह सूरी के नाम पर शेरशाह सूरी मार्ग भी कहा गया।

ऋचाः सुशासन के लिए शेरशाह सूरी ने सड़कें बनाने के अलावा और क्या प्रमुख काम किए?

https://xtremepape.rs/

प्रखरः शेरशाह सूरी ने सड़कों के किनारे-किनारे हर आठ किलोमीटर पर सरायें बनवाई थीं जो डाक चौकियों का काम भी करती थीं। घुड़सवार संदेशों को कुछ ही घंटों में एक चौकी से दूसरी चौकी तक पहुँचा देते थे। इस तरह दिल्ली से बंगाल तक महीनों में पहुँचने वाली ख़बरें और संदेश हफ़्तों में पहुँचने लगे थे। उस ज़माने के हिसाब से यह बहुत बड़ी और नई तकनीक थी।

ऋचाः तो शेरशाह ने यातायात के लिए सड़कें और सूचना भेजने के लिए सरायें बनवाईं। सुशासन के लिए और क्या-क्या किया?

प्रखरः शेरशाह ने दो नए विभागों की स्थापना की थी। राज्य के करों और ख़र्चों पर नज़र रखने के लिए दीवान-ए-विजारत और अपने दुश्मनों पर नज़र रखने के लिए दीवान-ए-बरीद, जो एक तरह का जासूसी विभाग होता था और शेरशाह की आँखों और कानों का काम करता था।

ऋचाः क्या शेरशाह ने अपनी रियासतों और अमीरों को काबू में रखने के लिए भी कोई व्यवस्था की थी?

प्रखरः जी हाँ। विद्रोह की संभावना पर अंकुश लगाने के लिए शेरशाह ने हर रियासत में दो अधिकारियों की नियुक्ति की थी। एक अधिकारी का काम कानून व्यवस्था को देखना था और दूसरे का काम सेना को संभालना। दोनों के अधिकार बराबर के थे इसलिए दोनों के एक होने और विद्रोह करने की संभावना ना के बराबर हो गई थी।

ऋचाः सुना है रुपया भी शेरशाह ने ही चलाया था।

प्रखरः बिल्कुल ठीक। सारे पुराने सिक्कों को वापिस लेकर शेरशाह ने चाँदी के रुपए और ताँबे के दाम चलाए थे जिनके वज़न और आकार निश्चित कर दिए गए थे। शेरशाह का चलाया हुआ रुपया ही आज भारत, पाकिस्तान, नेपाल और श्रीलंका समेत सात देशों की मुद्रा है। शेरशाह की इमारतें हिंदू और इस्लामी शैली का संगम मानी जाती हैं। बिहार के सासाराम ज़िले में स्थित उनका मकबरा इसकी जीती-जागती मिसाल है। उसे देख कर किसी मंदिर का सा आभास होता है।

ऋचाः प्रखर चाँद, शेरशाह सूरी की सुशासन की तकनीक के बारे में इतनी रोचक जानकारी देने के लिए बहुत-बहुत धन्यवाद।

प्रखरः आपका भी धन्यवाद। **

[Pause 30 seconds]

MALE: अभ्यास 2 की यह बातचीत अब आप फिर से सुनेंगे।

[Pause 3 seconds]
[Repeat from * to **]
[Pause 30 seconds]

MALE: अभ्यास 2 अब समाप्त हुआ। थोड़ी देर में आप अभ्यास 3 सुनेंगे। अब आप अभ्यास 3 के प्रश्नों पर ध्यान दीजिए।

[Pause 30 seconds]

https://xtremepape.rs/

FEMALE: अभ्यास 3: प्रश्न 8-15

उत्तराखंड के पर्यटन स्थल कौसानी की यात्रा के बारे में हिंदी के मूर्धन्य लेखक डॉ धर्मवीर भारती के एक संस्मरण को ध्यान से सुनिए और नीचे दिए गए प्रत्येक कथन में रेखांकित की गई ग़लती को सही शब्दों या वाक्यांश का प्रयोग करते हुए ठीक कीजिए।

यह संस्मरण आपको दो बार सुनाया जाएगा।

[Pause 5 seconds]
[Signal]
[Pause 3 seconds]

MALE: * सच तो यह है कि सिर्फ़ बर्फ़ को बहुत निकट से देख पाने के लिए ही हम लोग कौसानी गए थे। नैनीताल से रानीखेत और रानीखेत से मझकाली के भयानक मोड़ों को पार करते हुए कोसी। कोसी से एक सड़क अल्मोड़े चली जाती है, दूसरी कौसानी। कितना कष्टप्रद, कितना सूखा और कितना कुरूप है वह रास्ता। पानी का कहीं नामो निशान नहीं, सूखे भूरे पहाड़, हरियाली का नाम नहीं। ढालों को काटकर बनाये हुए टेढ़े मेढ़े रास्ते पर अल्मोड़े का एक नौसिखिया और लापरवाह ड्राइवर जिसने बस के तमाम मुसाफ़िरों की ऐसी हालत कर दी कि जब हम कोसी पहुँचे तो सभी के चेहरे पीले पड़ चुके थे।

कौसानी जाने वाले सिर्फ़ हम दो थे, वहाँ उतर गए। बस अल्मोड़े चली गई। सामने के एक टीन के शेड में काठ की बेंच पर बैठकर हम वक़्त काटते रहे। तबीयत सुस्त थी और मौसम में उमस थी। दो घण्टे बाद दूसरी बस आकर रुकी और जब कोसी से बस चली तो रास्ते का सारा दृश्य बदल गया। सुडौल पत्थरों पर कल-कल करती हुई कोसी, किनारे के छोटे-छोटे सुंदर गाँव और हरे मखमली खेत। कितनी सुंदर है सोमेश्वर की घाटी। हरी-भरी।

पर ज्यों-ज्यों बस आगे बढ़ रही थी, हमारे मन में एक अजीब सी निराशा छाती जा रही थी अब तो हम लोग कौसानी के नज़दीक हैं, कोसी से 18 मील चले आए, कौसानी सिर्फ़ छह मील है, पर कहाँ गया वह अतुलित सौंदर्य, वह जादू जो कौसानी के बारे में सुना जाता था। आते समय मेरे एक सहयोगी ने कहा था कि कश्मीर के मुकाबले में उन्हें कौसानी ने अधिक मोहा है, गाँधी जी ने यहीं अनासक्ति योग लिखा था और कहा था कि स्विट्ज़रलैंड का आभास कौसानी में ही होता है।

सोमेश्वर की घाटी के उत्तर में जो ऊँची पर्वतमाला है, उस पर, बिलकुल शिखर पर, कौसानी बसा हुआ है। कौसानी से दूसरी ओर फिर ढाल शुरू हो जाती है। कौसानी के अड्डे पर जाकर बस रुकी। छोटा-सा, बिलकुल उजड़ा-सा गाँव और बर्फ़ का तो कहीं नामो निशान नहीं। बिलकुल ठगे गए हम लोग। कितना खिन्न था मैं। अनखाते हुए बस से उतरा कि जहाँ था वहीं पत्थर की मूर्ति-सा स्तब्ध खड़ा रहा गया। कितना अपार सौंदर्य बिखरा था सामने की घाटी में।

अकस्मात हम एक दूसरे लोक में चले आए थे। इतना सुकुमार, इतना सुंदर, इतना सजा हुआ और इतना निष्कलंक कि लगा इस धरती पर तो जूते उतारकर, पाँव पोंछकर आगे बढ़ना चाहिए। धीरे-धीरे मेरी निगाहों ने इस घाटी को पार किया और जहाँ ये हरे खेत और नदियाँ और वन, क्षितिज के धुँधलेपन में, नीले कोहरे में घुल जाते थे, वहाँ पर कुछ छोटे पर्वतों का आभास अनुभव किया, उसके बाद बादल थे और फिर कुछ नहीं।

कुछ देर उन बादलों में निगाह भटकती रही कि अकस्मात फिर एक हलका सा विस्मय का धक्का मन को लगा। इन धीरे-धीरे खिसकते हुए बादलों में यह कौन चीज़ है जो अटल है। यह छोटा सा बादल के टुकड़े सा और कैसा अजब रंग है इसका, न सफ़ेद, न रुपहला, न हल्का नीला... पर तीनों का आभास देता हुआ। यह है क्या? बादल धीरे-धीरे नीचे उतर रहे थे और एक-एक कर नए-नए शिखरों की हिम-रेखाएँ अनावृत हो रही थीं। और फिर सब खुल गया। बाईं ओर से शुरू होकर दायीं ओर गहरे शून्य में धँसती जाती हुई हिमशिखरों की ऊबड़-खाबड़, रहस्यमयी, रोमांचक शृंखला। सूरज ढल रहा था और सुदूर शिखरों पर दर्रों, ग्लेशियरों, ढालों और घाटियों का आभास मिलने लगा था। **

[Pause 30 seconds]

https://xtremepape.rs/

FEMALE: अभ्यास 3 का यह संस्मरण अब आप फिर से सुनेंगे।

[Pause 3 seconds]
[Repeat from * to **]
[Pause 30 seconds]

MALE: अभ्यास 3 अब समाप्त हुआ। थोड़ी देर में आप अभ्यास 4 सुनेंगे। अब आप अभ्यास 4 के प्रश्नों पर ध्यान दीजिए।

[Pause 30 seconds]

FEMALE: अभ्यास 4: प्रश्न 16-23

यातायात वैज्ञानिक डॉ पैम सार्जेंट के साथ नए क्षितिज के संवाददाता वचन वोहरा की बातचीत को ध्यान से सुनिए और निम्नलिखित वाक्यों को पूरा करने के लिए A, B अथवा C में से किसी एक विकल्प को सही| [✓] का निशान लगा कर चुनिए।

यह बातचीत आपको दो बार सुनाई जाएगी।

[Pause 5 seconds]
[Signal]
[Pause 3 seconds]

MALE: * वचनः डॉ पैम सार्जेंट, 'नये क्षितिज' के पाठकों की ओर से चर्चा में आपका स्वागत है।

FEMALE: प्रेरणाः धन्यवाद वचन जी।

वचनः पैम जी, आप सड़कों पर बढ़ती भीड़ के समाधान खोजने की कोशिश कर रही हैं। ज़रा बताइए आप किस तरह के समाधानों पर काम कर रही हैं और वे कितने कारगर हो सकते हैं?

पैमः वचन जी, हम अपने विभाग में दो तरह के समाधानों पर काम कर रहे हैं। एक तरफ़ तो हम सड़कों के विकल्प तैयार कर रहे हैं जिनके द्‌वारा वाहनों का यातायात हो सके और दूसरी तरफ़ ऐसे तरीक़ों की खोज कर रहे हैं जो व्यावहारिक हों और जिनके द्‌वारा कम वाहनों से ज़्यादा से ज़्यादा लोग आ-जा सकें।

वचनः लेकिन सड़कों के विकल्प तो मौजूद हैं! जैसे रेलगाड़ियाँ, विमान और जहाज़। आप कैसे विकल्पों पर काम कर रही हैं?

पैमः रेलगाड़ियाँ, विमान और जहाज़ सड़कों के नहीं सड़क यातायात के विकल्प हैं। आप उन से यात्रा कर सकते हैं लेकिन आपकी कारें उन पर नहीं चल सकतीं। हम लोग सड़कों के नीचे सुरंगें बनाने और बहुमंज़िला सड़कें बनाने की संभावनाएँ तलाश रहे हैं। लॉस एंजिलिस की एक कंपनी ने सुरंग सड़कों और बहुमंज़िला सड़कों के नमूने भी तैयार कर लिए हैं। लेकिन यह विकल्प अभी ख़र्चीला है और उतना व्यावहारिक नहीं है।

वचनः तो फिर व्यावहारिक विकल्प क्या हैं?

https://xtremepape.rs/

पैमः मैं यही कह रही थी कि व्यावहारिक विकल्प हैं सड़कों के मौजूदा जाल पर कम से कम वाहनों के ज़रिए ज़्यादा से ज़्यादा यातायात की व्यवस्था करना। या फिर ऐसी कारों का विकास करना जो जाम लगने पर हैलीकॉप्टरों की तरह उड़ कर आगे जा सकें। ऐसी कारें भी बन रही हैं जो पार्किंग में कम जगह घेरने के लिए सिकुड़ कर अपनी लंबाई को आधा कर सकें।

वचनः लेकिन कार शेयरिंग या साझा करने की व्यवस्था भी शहरों में पहले से मौजूद है!

पैमः लेकिन एक-दो अपवादों को छोड़ कर यह बहुत कामयाब नहीं हो पाई है। इसीलिए उबर और गूगल ऐसी स्वचालित यानी अपने आप चलने वाली कारों का परीक्षण कर रहे हैं जो बिजली से चलेंगी और बहुमंज़िला फ़्लैटों में कई-कई घरों के लिए दो-तीन से ज़्यादा नहीं होंगी। ये कारें पहले से बुक की जा सकेंगी और कम से कम चार सवारियों के बिना नहीं चलेंगी।

वचनः योजना तो अच्छी है लेकिन किसी को किसी ज़रूरी काम से जल्दी जाना हो तो?

पैमः ऐसे लोगों के लिए कार-स्टैंड से कारें आएँगी और दुर्घटना या बीमारी जैसी स्थिति में लोग तत्काल भी इन कारों से जा सकेंगे। इसके अलावा इन कारों के लिए विशेष लेन की व्यवस्था भी की जा रही है जिस पर ये कारें सौ से डेढ़ सौ किलोमीटर प्रति घंटे की गति से चल सकेंगी।

वचनः और उड़ने वाली कारें?

पैमः उड़ने वाली कारों की दो श्रेणियाँ हैं। कुछ कंपनियाँ ऐसी कारों का विकास कर रही हैं जो शहरों के भीतर हल्के हैलीकॉप्टरों की तरह उड़ सकेंगी और शहरों से बाहर खुली सड़कों पर कारों की तरह चल सकेंगी। दूसरी कंपनियाँ इस तरह के वाहनों का विकास कर रही हैं जो यातायात जाम में फँस जाने पर थोड़ी दूरी के लिए उड़ सकेंगे।

वचनः कारों के अलावा क्या ऐसी बसों का विकास भी किया जा रहा है जो सड़कों पर जगह न घेरें?

पैमः जी हाँ, इस तरह की ट्रॉली बसें बनाई गई हैं जो सड़क की दो लेनों जितनी चौड़ी होती हैं लेकिन इनकी निचली मंज़िल एकदम खाली होती है। सीटें पहली मंज़िल पर ही होती हैं और इनके बस स्टैंड भी पहली मंज़िल पर। ये बसें तय लेनों में चलती हैं और इनके नीचे से कारें बड़ी आसानी से आ-जा सकती हैं।

वचनः इस तरह की कारें और वाहन कब तक सड़कों पर दिखाई देने लगेंगे?

पैमः इन सब के नमूने तो तैयार हैं। देर इनको व्यावहारिक, सस्ता और सुगम बनाने की है। अगले दशक के मध्य तक इन्हें सड़कों पर आ जाना चाहिए। बल्कि तब तक ऐसी कारें और बसें भी चलने लगेंगी जो ईंधन के मामले में आत्मनिर्भर होंगी।

वचनः मतलब?

पैमः मतलब यह कि ये कारें और बसें सौर ऊर्जा, डायनेमो की ऊर्जा, और हाइड्रोजन की ऊर्जा के मिश्रण से चला करेंगी। इसलिए इन्हें तेल और बिजली के चार्ज के सहारे नहीं रहना पड़ेगा।

https://xtremepape.rs/

वचनः डॉ पैम सार्जेंट, अगली पीढ़ी की सड़कों और कारों की जानकारी देने के लिए बहुत-बहुत धन्यवाद।

पैमः आपका भी धन्यवाद। **

[Pause 30 seconds]

FEMALE: अभ्यास 4 की यह बातचीत अब आप फिर से सुनेंगे।

[Pause 3 seconds]
[Repeat from * to **]
[Pause 30 seconds]

FEMALE: अभ्यास 4 और यह परीक्षा समाप्त हुई।

This is the end of the examination.

© UCLES 2019

https://xtremepape.rs/

BLANK PAGE

Permission to reproduce items where third-party owned material protected by copyright is included has been sought and cleared where possible. Every reasonable effort has been made by the publisher (UCLES) to trace copyright holders, but if any items requiring clearance have unwittingly been included, the publisher will be pleased to make amends at the earliest possible opportunity.

To avoid the issue of disclosure of answer-related information to candidates, all copyright acknowledgements are reproduced online in the Cambridge Assessment International Education Copyright Acknowledgements Booklet. This is produced for each series of examinations and is freely available to download at www.cambridgeinternational.org after the live examination series.

Cambridge Assessment International Education is part of the Cambridge Assessment Group. Cambridge Assessment is the brand name of the University of Cambridge Local Examinations Syndicate (UCLES), which itself is a department of the University of Cambridge.

https://xtremepape.rs/